519

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट–5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2405**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): ममता जोशी

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2405 09 /0 /8 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

1	1	0	5	6	3	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी एक आर्य भाषा है जिसका विकास मूल आर्य भाषा संस्कृत से हुआ है तथा अन्य क्षेत्रों तक इसका विकास हुआ है।

हिन्दी भाषा क्षेत्र

- भारत में
  - मुख्य भाषा के रूप में
  - द्वितीय भाषा के रूप में
  - केवल समझने के स्तर पर
- भारत के बाहर
  - भारत के लोगों द्वारा बोली जाती
  - अकादमी के स्तर पर

① भारत में – भारत मुख्यतः 60 प्रतिशत जनसंख्या के द्वारा मुख्य भाषा के रूप में बोली जाती है जैसे – उत्तरप्रदेश, बिहार राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचलप्रदेश, मध्यप्रदेश इत्यादि

→ द्वितीय भाषा के रूप में
पंजाब, जम्मू-कश्मीर, गुजरात

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इत्यादि द्वारा बोली जाती है।

→ केवल समझने के स्तर पर केरल, आंध्रप्रदेश तेलंगाना, अरुणाचलप्रदेश, सिक्किम इत्यादि को रखा जा सकता है,

(2) भारत के बाहर - भारत के बाहर मुख्य रूप से जो गिरमिटिया मजदूर भारत से गये थे और वहीं बस गये वह बोलते है या भारत से अस्थायी रूप से रोजगार की तलाश में गये लोगों द्वारा बोली जाती है। जैसे - फिजी, टोबैगो, त्रिनिनाद इत्यादि

→ भारत के बाहर कुछ देशों में केवल विश्वविद्यालय स्तर पर अकादमिक कार्य हेतु प्रचलन भी देखने को मिलता है जैसे - अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस इत्यादि,

(3) हिंदी भाषा जनसंख्या के हिसाब से बोली जाने वाली तीसरी बड़ी भाषा है अतः यह एक बड़ा क्षेत्र घेरती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

स्वतंत्रता आंदोलन के समय अनेक राष्ट्रीय नेता अपनी क्षेत्रीय भाषाओं का मोह त्याग कर हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे जिनमें प्रमुख थे - महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय इत्यादि।

उपर्युक्त सभी राष्ट्रीय सुधारकों में सर्वप्रमुख बाल गंगाधर तिलक है जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि बनाने का पक्ष लिया।

*** राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में तिलक का योगदान**

(1) तिलक ने अपने राष्ट्र भाषणों में कहा कि हिन्दी ही वह एकमात्र भाषा है जो भारतीयों को एक कर सकती है अतः इसे राष्ट्रभाषा की मान्यता मिलनी चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) तिलक ने हिन्दी के विकास में अपने साप्ताहिक समाचार पत्र 'केसरी' का सम्पादन हिन्दी भाषा में किया ताकि अधिक से अधिक जनता तक अपनी बात को वह पहुँचा सके।

(3) उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अनेक कार्य किये यथा— मंचीय भाषणों में हिन्दी का प्रयोग, शिक्षा की भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकारना इत्यादि — जिससे हिन्दी को एक राष्ट्रभाषा की छवि प्राप्त हो सके।

☞ सार रूप में कहा जा सकता है कि, हिन्दी के विकास में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान है किन्तु तिलक का योगदान अविस्मरणीय है जो उनके राष्ट्रप्रेम की भावना को उजागर करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी भाषा का साहित्यिक स्वरुप वैसे तो आदिकाल (अमीर खुसरो) से ही दिखने लगता है किन्तु 1850 से भारतेंदु युग में गद्य के क्षेत्र में पूर्ण रूप से विकसित हो गया था किन्तु भाषायी द्वैत बना रहा गद्य की भाषा हिन्दी होते हुए भी पद्य अभी भी ब्रज भाषा में लिखा जा रहा था और यह भाषायी द्वैत द्विवेदी युग में समाप्त हुआ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान हिन्दी भाषा के मानकीकरण के क्षेत्र में अविस्मरणीय एवं अप्रतिम है।

निम्न योगदान –

(1) उन्होंने स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया कि, क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग को छोड़ना होगा।

(2) गद्य व पद्य की भाषा में एक रूपता होनी चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) परसर्गों को संज्ञा से अलग करके लिखना ।

(4) लिंग – स्त्रीलिंग व पुल्लिंग के बहुत से शब्दों को निश्चित किया गया जैसे – आत्मा, वायु, अग्नि इत्यादि स्त्रीलिंग के रूप में मान्यता दी

(5) क्रिया के कुछ प्रयोगों को छोड़ दिया जैसे – आवें, जावें इत्यादि

उपर्युक्त योगदान के अतिरिक्त द्विवेदी जी का योगदान हिन्दी भाषा के व्याकरणिक लेखन में भी देखा जा सकता है उन्हीं के निर्देशन में कामताप्रसाद गुरु व किशोरी लाल वाजपेयी जैसे विद्वानों ने खड़ी बोली का वैयाकरणिक लेखन किया था जिससे खड़ी बोली को वर्तमान स्वरूप जो देखते है वह द्विवेदी युग व द्विवेदी जी का ही योगदान है,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ साहित्य, हिन्दी साहित्य के आदिकालीन साहित्य (700 - 1350 ई.) का एक भाग है हालांकि यह एक विवाद्य विषय है कि, इसे हिन्दी साहित्य का हिस्सा माना जाये या नहीं।

इस मत पर आचार्य शुक्ल एवं आचार्य द्विवेदी के मध्य विवाद दिखते हुए भी दोनों में सामान्य सहमति है कि नाथ साहित्य हिन्दी साहित्य का साहित्य नहीं है,

परन्तु राहुल सांकृत्यायन जैसे विद्वान मानते है कि नाथ साहित्य में प्रारंभिक हिन्दी के संकेत देखे जा सकते है जैसे :-

"नौ लख पातरि आगे नाचै, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि वसै भंडारा।"

उपर्युक्त पंक्तियों में स्पष्ट रूप से हिन्दी की व्याकरणिक व शब्दावली के स्तर पर समानता देखी जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाथ सम्प्रदाय मूल रूप से सिद्ध सम्प्रदाय से विकसित किन्तु संयम, एवं निवृत्ति मार्ग का अनुसरण करते हुए विकसित हुआ था जिसमें प्रमुख रूप से 9 नाथों की संख्या ज्ञात मानी जाती है जो विभिन्न समयान्तराल में हुये थे जिससे उनके काव्य में भाषागत अंतराल देखा जा सकता है जैसे – शुरुआती काव्य में अपभ्रंश की अधिकता दिखती है –

"जाणि के अजाणि होय बात तू ले पछाणि"

उपर्युक्त दोनों पद्यांशों की पंक्तियों में भाषागत अंतर देखा जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि, नाथ साहित्य में खड़ी बोली के बीज दिखने लगे थे तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

आज का दौर कम्प्यूटर का युग है किन्तु भाषा इसके क्षेत्र में अवरोध बनी हुई है क्योंकि अधिकांश तकनीकी विकास पश्चिम में होता है जो अंग्रेजी भाषा में विकसित होता है तत्पश्चात उसे हिन्दी भाषा में रूपान्तरित किया जाता है, जिसमें समय तथा गुणवत्ता दोनों की समस्या उत्पन्न होती है।

* देवनागरी लिपि के कम्प्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयास —

① टाइपराइटर का विकास - सर्वप्रथम हिन्दी की देवनागरी लिपि के लिए टाइपराइटर का विकास हुआ तथा उसी में अनेक स्तर पर आधुनिकीकरण का प्रयास किया जाता रहा जैसे - टेलीप्रिंटर, इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर, कैमरा इत्यादि।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) कम्प्यूटरीकरण के स्तर पर

- सिस्टम सॉफ्टवेयर
  - इसमें भाषा के लिए उपलब्ध निर्देशों की सीमितता थी जिससे ट्रांसलेशन की समस्या बनी रही।
- एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर
  - डाटा प्रोसेसिंग को आसान बनाना
    - डाटा प्रोसेसिंग – MS Excel
    - वर्ड प्रोसेसिंग – MS Word

(3) आधुनिक प्रयास –

(1) वर्तमान सभी भारतीय भाषाओं में कुंजीफलक की उपलब्धता है।

(2) लिप्यंतरण की समस्या भी लगभग समाप्त हो गई है।

(3) राजभाषा विभाग का तकनीकी प्रभाग इस क्षेत्र में प्रमुख कार्य कर रहा है,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर नातिदीर्घ निबंध लिखिए। 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) अखिल भारतीय काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विस्तार पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदिकाल व भक्तिकाल में ब्रजभाषा के उदाहरण तो मिलते है किन्तु यह क्षेत्र विशेष तक ही सीमित थी किन्तु सूरदास के पदयों ने जो चमत्कार उत्पन्न कर ब्रजभाषा में श्रृंगार व वात्सल्य रस से पूर्ण किया था जिससे रीतिकाल तक आते-आते ब्रजभाषा अखिल भारतीय काव्य भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी थी इसी लिए

- भिखारीदास को कहना ही पड़ा —

"ब्रजभाषा हेत ब्रजवास ही न अनुमानो
ऐसे-ऐसे कविन की बानी है सो जानिए।"

अर्थात् केवल ब्रज में रहने वालों की भाषा ही ब्रज भाषा नहीं है सम्पूर्ण भारत वर्ष में ब्रज भाषा में कवि कविता कर रहे है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* ब्रजभाषा के अखिल भारतीय विस्तार के कारण –

(1) श्रृंगार की विशेषीकृत भाषा :– रीतिकाल श्रृंगार प्रधान युग था अतः उन्हें एक कोमल अभिव्यंजना की भाषा चाहिए थी,

(2) मुक्तक परम्परा – ब्रजभाषा में चंचलता व तेजी है जिससे रीतिकालीन पाठक कुछ ही समय में रसानुभूति कर सके।

(3) तात्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ – उस समय दरबारी माहौल था युद्ध की आवश्यकता समाप्त हो चुकी थी अतः श्रृंगारिक प्रवृत्तियों की अधिकता थी,

(4) रीतिकाल का माहौल ~~कलात्मक~~ आनंद का माहौल था जिसमें मनोरंजन पूर्ण काव्य की आवश्यकता जो चंचलता की मांग कर रही थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) भक्तिकालीन कृष्णकाव्य परम्परा, रीतिकाल में भी दिखने को मिलती है

* ब्रजभाषा अखिल भारतीय भाषा होने के प्रमाण

(1) अवध क्षेत्र – अवध क्षेत्र में तुलसीदास जी ने 'कवितावली', 'विनयपत्रिका' जैसी रचना ब्रज भाषा में की है,
'राम सौ बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो।"

(2) पंजाब – पंजाब में गुरु नानक व गुरु गोविंद सिंह ब्रज भाषा में 'चंडीसतक' जैसी पुस्तक की रचना कर रहे थे,

(3) राजस्थान – राजस्थान में जयपुर राजघराने में कवि बिहारी व मीरा जैसे कृष्ण भक्त ब्रज भाषा में काव्य रचना कर रहे थे –
"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है, नैननु ही सौं बात।" – (बिहारी)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) ओरछा – केशवदास लम्बे समय तक ओरछा (मध्यप्रदेश) के दरबार में रहे तथा ब्रजभाषा में रचना की –

(5) महाराष्ट्र – रीतिकाल में शिवाजी के दरबारी कवि भूषण ब्रज भाषा में रचना कर रहे थे –

"तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर
त्यों म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।"

(6) आदिकाल – दिल्ली दरबार में –
अमीर खुसरो –
"मेरा मोसे सिंगार करावत।"

(7) भारतेंदु युग – पद्य ब्रजभाषा में ही लिखते रहे।

(8) उपर्युक्त स्थानों के अतिरिक्त अन्य स्थानों जैसे – गुजरात (नरसी मेहता) बंगाल (चैतन्य महाप्रभु) इत्यादि ब्रजभाषा मे लिखते रहे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

क्रिया भाषा का वह विकारी पद है जिसके माध्यम से कुछ करना या होना सूचित होता है।

यह भाषा की मूल इकाई मानी जाती है क्योंकि इसके अभाव में स्वतंत्र वाक्य का निर्माण ~~नि~~ नहीं हो सकता।

⇒ क्रिया का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जा सकता है —

क्रिया के भेद

अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया
→ जब क्रिया बिना कर्म की अपेक्षा के हो	जब कर्ता के साथ कर्म भी उपस्थित हो
उदा. - राम हँसा	उदा. - श्याम ने हिंदी की पुस्तक पढ़ी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संयुक्त क्रिया के आधार पर भेद

- **मुख्य क्रिया** — क्रिया का मूल भाग
- **संयोजी क्रिया** — क्रिया के पक्ष व वृत्ति की सूचना देती है।
- **रंजक क्रिया** — विशिष्ट अर्थ प्रदान करना
- **सहायक क्रिया** — क्रिया की उत्तरपदी होती है

उदा. मोहन जा रहा है।

- मोहन → कर्ता
- जा → मुख्य क्रिया
- रहा → संयोजी क्रिया
- है → सहायक क्रिया

क्रिया (अन्य भेद)

- **समापिका क्रिया** - वाक्य के अंत में विधेय पक्ष में आती है।
- **असमापिका क्रिया** - वाक्य के अंत में न आकर कहीं भी क्रिया आ जाये

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रिया के अन्य भेद

प्रेरणार्थक क्रिया
- कर्ता की प्रेरणा से कोई कार्य हो जाये

नामधातु क्रिया
संज्ञा या सर्वनाम से शब्द रूप परिवर्तन से क्रिया का निर्माण।

उदा. – हाथ- हथियाना

☞ हिन्दी में क्रिया का क्रम प्रायः निश्चित होता है जो वाक्य के अंत में आती है

समग्रतः हिन्दी की क्रिया व्यवस्था काफी वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) 'राजस्थानी हिन्दी' पर प्रकाश डालिये। 20

राजस्थान में प्रमुखतः बोली जाने वाली तथा मालवा एवं सिंध के प्रदेशों में कुछ क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा है।

भाषाई विशेषताएँ :-

1. 'ट' वर्ग बहुला भाषा है।
2. पुल्लिंग एकवचन शब्द प्रायः ओकारांत होते हैं - तारो, हम्को इत्यादि
3. बहुवचन शब्द के अंत में आँ की ध्वनि लगाना की व्यवस्था जैसे:- ताराँ, राताँ इत्यादि।
4. परसर्ग हिन्दी में -
   - → के, को के स्थान पर → नै
   - → से परसर्ग के स्थान पर - सूँ
5. संयुक्त अक्षरों की अधिकता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजस्थानी की उपबोलियाँ

- मारवाड़ी
- मेवाती
- मालवी
- जयपुरी/ ढूंढाड़ी

(1) <u>मारवाड़ी</u> – राजस्थान की सभी चारों प्रमुख बोलियों में इसका स्थान भौगोलिक एवं जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक है।

— मारवाड़ी की भी अनेक उपबोलिया है जैसे :- मेवाड़ी, मालवी, नागौरी इत्यादि

—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखियेः 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अमीर खुसरो आदिकाल के 14वीं सदी के आरंभिक काल के कवि है जिन्होंने भाषायी क्षेत्र में अनेक भाषा पर प्रयोग किये उनके काव्य में ब्रज भाषा, अरबी, उर्दू, तथा खड़ी बोली दिख जायेगी।

आचार्य शुक्ल ने खुसरो की भाषा को देख कर आश्चर्य से पूछा है कि - "क्या उस समय तक भाषा ~~इतनी~~ घिसकर इतनी चिकनी हो गई थी जितनी खुसरो के काव्य में दिखता है।"

खुसरो के काव्य में आधुनिक खड़ी बोली के तत्व देखे जा सकते है जैसे -

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा
चारो ओर वह थाल फिरे, मोती उसमें एक न गिरे।"

उपर्युक्त भाषा शुद्ध रूप से आधुनिक खड़ी बोली के नजदीक दिखती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाषः 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेलः help@groupdrishti.in :: वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु खुसरो की भाषा में कुछ मिश्रित भाषाओं के प्रयोग भी देखे जा सकते हैं
जैसे – फारसी तथा ब्रज भाषा
ब्रज भाषा तथा खड़ी बोली

यथा:– "खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।"

उपर्युक्त पंक्तियों में ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली का मिश्रण होने के बाद भी भाषा का प्रवाह बना हुआ है।

यही भाषा के प्रवाह के कारण खुसरो का स्थान भाषिक प्रयोग करने के मामले में अप्रतिम है। जिसे आगे के कवियों ने अपने काव्य में ब्रज भाषा व खड़ी बोली के रूप में शामिल किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन ने ब्रज भाषा से स्वतंत्र रूप से अलग स्वीकारते हुए कन्नौजी बोली को स्वतंत्र दर्जा दिया है।

कन्नौज के क्षेत्र में प्रमुख रूप से बोली जाने वाली भाषा है जिसमें प्रमुख रूप से कन्नौज, फर्रुखाबाद, कानपुर इत्यादि के आस-पास बोली जाती है।

प्रमुख विशेषताएँ :-

(1) पुल्लिंग शब्द सामान्यतः उकारांत होता है जैसे :- रामु, कानु, पेटु इत्यादि

(2) इसमें ड, ढ, तथा ड़ ढ़ का स्पष्ट भेद देखने को मिलता है।

(3) कन्नौजी भाषा में अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति सामान्य रूप से देखने को मिलती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे - बात > बाँत

(4) इस बोली में व्यंजनों का संयोग देखने को मिलता है जैसे :- बादशाह > बास्साह इत्यादि

(5) हिन्दी के अकारांत शब्द ओकारांत में बदल जाते है जैसे :- छोरा > छोरो इत्यादि ।

उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद कन्नौजी भाषा ब्रज भाषा से अत्यधिक समानता रखती है तथा प्राचीन काव्य में दोनों समान रूप से देखने को मिल जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली का प्रारंभिक रूप तो हमें सिद्ध-नाथ साहित्य एवं ~~अमिर~~ अमीर खुसरो के काव्य में देखने को मिलता है किन्तु आधुनिक काल में खड़ी बोली साहित्य की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित हुई।

19 वीं सदी में खड़ी बोली की शुरुआत अंग्रेजों को एक ऐसी भाषा के रूप में करना पड़ा जिसमें वह सम्पर्क सूत्र के रूप में कर सके जिसमें शुरुआती दौर में इसाई मिशनरियों का योगदान तथा ~~फोर्ट~~ फोर्ट विलियम कॉलेज का योगदान महत्वपूर्ण है।

किन्तु धीरे-धीरे खड़ी बोली सामान्य जन की महत्वपूर्ण भाषा ~~ब~~ भाषा बन गई जिसमें अनेक समाज सुधारक यथा- स्वामी दयानंद सरस्वती, विवेकानंद इत्यादि तथा अनेक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाचार व पत्र-पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है जो इस प्रकार है —

वर्ष	पत्र-पत्रिका	सम्पादक
1826 →	उदन्त मार्तंड →	जुगल किशोर
1868 →	कविवचन सुधा →	भारतेंदु हरिश्चंद्र
1873 →	हरिश्चंद्र मैगजीन →	भारतेंदु हरिश्चंद्र
1877 →	हिन्दी प्रदीप →	बाल कृष्ण भट्ट
1883 →	ब्राह्मण →	प्रताप नारायण मिश्र

19 वीं सदी में पत्र-पत्रिकाएँ ही वह माध्यम था जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी जा सकती थी तथा आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाया जा सकता था।

19 वीं सदी में भारतेंदु युग में भारतेंदु मंडल की महत्वपूर्ण भूमिका थी जिससे खड़ी बोली गद्य की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित हो सकी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा की शुरुआत हमे आदिकाल में पिंगल भाषा के रूप में पृथ्वीराज रासो (चंदबरदाई) में दिखती है ऐसा धर्मवीर भारती का मानना था।

किन्तु स्पष्ट रूप से खुसरो की भाषा में दिखता है जिससे ब्रज भाषा सूरदास को मिली और उन्होंने उसे वात्सल्य एवँ शृंगार की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया जो आगे चल कर सम्पूर्ण रीतिकाल की प्रमुख भाषा रही।

* ब्रजभाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ -

(1) ब्रजभाषा में 'ऐ' व 'औ' का उच्चारण शुद्ध रूप में मिलता है (खड़ी बोली - 'ए' व 'ओ' तथा अवधी - 'अइ' व 'अउ')

(2) ब्रजभाषा में ओकारांत की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखती है जैसे - होता > होतो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) ब्रजभाषा में 'ण' का ड़ व 'म' का 'न' हो जाता है।
जैसे :- बाण > बान

(4) ब्रजभाषा में क्रिया संरचना में
वर्तमान रूप — त - रूप → काढ़त,
भूतकाल रूप - 'औ' या यौ → चलौ

(5) ब्रजभाषा में नपुंसक लिंग भी मिलता है जैसे :- सोना (पुल्लिंग) > सोनौ (नपुंसकलिंग)

(6) ब्रजभाषा में आकारांत शब्द ओकारांत हो जाता है।
जैसे :- काला > कालो
गोरा > गोरो

(7) ब्रजभाषा में परसर्गों का नियम अन्य आर्य भाषाओं के समान ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

राजभाषा अधिनियम, 1963, प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के शासन काल में निर्मित वैधानिक प्रारूप है।

इस अधिनियम की पृष्ठभूमि में उस समय भाषाई आधार पर कई राज्यों का गठन हो रहा था जो केन्द्रीय सरकार पर संघवाद के दबाव को दिखाता था इसी परिप्रेक्ष्य में इसका निर्माण किया गया जिसके प्रावधान निम्न है —

प्रमुख प्रावधान —

① 26 ~~जन~~ जनवरी 1965 के बाद भी हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग यथावत् चलता रहेगा।

② उच्च न्यायालयों के निर्णयों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी व किसी राज्य स्तरीय भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

(3) उच्चतम न्यायालय की भाषा अंग्रेजी बनी रहेगी।

(4) संघ के सभी दस्तावेजों, संकल्पों, प्रस्तावों को हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में जारी करना अनिवार्य होगा।

(5) जब तक अहिंदी भाषी प्रदेश ~~हिन्दी~~ अंग्रेजी को समाप्त करने का संकल्प नहीं ले लेंगे तब तक अंग्रेजी भाषा चलती रहेगी।

इस प्रकार भारत में भाषायी द्वैत को स्थायित्व प्रदान किया गया जिससे आगे चल कर राजनीतिक तुष्टीकरण की नीति को बढ़ावा मिला।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक हिन्दी आदिकाल में 13-14 वीं सदी में स्पष्ट रूप से देखने को मिलने लगती है जिसमें संस्कृत के संयोगात्मक प्रकृति से वियोगात्मक प्रकृति देखने को मिलने लगती है जो कि भाषा की आसान होती प्रकृति को दर्शाता है।

* प्रारंभिक हिन्दी की व्याकरणिक स्वरूप

① संज्ञा व कारक व्यवस्था

→ परसर्गों का विकास काफी तेजी से हुआ

कर्ता - ने, नै

कर्म - को, कौं, कूँ

संबंध - का, के, की, कै

करण - अपादान - से, तैं, ते

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

→ विभिन्न विभक्तियों का प्रयोग भी होता रहा जैसे :- 'हिं' विभि विभक्ति से अनेक परसर्गों के स्थान पर कार्य चलता रहा।

② वचन व्यवस्था

→ बहुवचन बनाने के नियम स्पष्ट होने लगे जैसे :- बेटा - बेटे

→ स्त्रीलिंग में एकवचन से बहुवचन बनाने की प्रक्रिया में कई प्रत्यय जोड़े जाने लगे जैसे :- अन, ऐं, आँ

सखी > ~~सखा~~ सखियन

③ लिंग व्यवस्था -

→ नपुंसक लिंग का लोप होने लगा

→ स्त्रीलिंग शब्द इकरांत होने लगे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे :- दुलहिनि, औरति इत्यादि

④ सर्वनाम -

→ सर्वनाम पूरी तरह से विकसित हो गये थे जैसे :-

उत्तम पुरुष - मैं, हौं, हम

मध्यम पुरुष - तूँ, तोहि, तुम, तेरा

अन्य पुरुष - सो, ते, वे

⑤ क्रिया रचना -

→ कृदंत क्रियाओं की प्रमुखता जैसे :-
चलिहैं, चलहुँ

→ पूर्वकालिक क्रियाओं के लिए प्रायः 'इ' परसर्ग का प्रयोग।
जैसे :- चलि, उठि

→ संयुक्त क्रियाओं की प्रवृत्ति भी तेजी से विकसित।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* पुरानी हिन्दी में अन्य ध्वनि व शब्द संबंधित विशेषताओं को भी देख सकते है।

(1) स्वर भक्ति – स्वर भक्ति की प्रवृत्ति बढ़ गई थी जैसे:- प्रकार - परकार

(2) क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण –

जैसे:- पुत्र > पुत्त > पूत

(3) ऋ स्वर का लुप्त होना – ऋ के स्थान पर अ इ, उ, रि का प्रयोग।
जैसे:- अमृत > अमिय

(4) देशज शब्दों का प्रयोग बढ़ा —
जैसे:- चूडा, घाघरा इत्यादि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1918 में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार कार्यालय' के रूप में 'हिन्दी प्रचार सभा" की स्थापना महात्मा गाँधी के प्रयासों से हुई जिससे सम्पूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन को एक धागे में पिरोया जा सके।

इस क्षेत्र में सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्तर पर प्रथम प्रयास प्रतापनारायण वाजपेयी द्वारा शुरू किया गया जिसमें आगे चल कर - ई. वी. रामास्वामी, नरसिंह अय्यर जैसे स्थानीय नेताओं का शामिल होना प्रमुख था।

द्विवेदी युगीन 'भारत - भारती' की रचना (मैथिलीशरण गुप्त) के बाद से तमिलनाडु के लोगों को रूसान हिन्दी की तरफ देखने को मिला तथा उन्होंने हिन्दी को भाषा के रूप में सीखने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का प्रयास किया था।

1927 ई. में स्वतंत्र रूप से दक्षिण भारत में 'भारत हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना की गई तथा हिन्दी के प्रचार के लिए विभिन्न तरीके से कार्य करने का प्रयास किया।

1932 में हिन्दी के प्रचार के लिए गाँवों एवं शहरों में स्कूलों व विश्वविद्यालयों में नगरपालिका, जिला बोर्डों में हिन्दी को स्थान दिलाने के लिए आंदोलन चलाये जा रहे थे।

इस समय तमिलनाड के नेता देश के दूसरे क्षेत्रों से जुड़ने के लिए हिन्दी भाषा सीख रहे थे तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे।

तिरुच्चिरापल्ली व मदुरै हिन्दी के प्रचार-प्रसार का प्रमुख केन्द्र बन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चुके थे। तथा अनेक क्षेत्र से पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा था।

कांग्रेस के अनेक सम्मेलनों के माध्यम से हिन्दी को एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार करने का अथक प्रयास किया जा रहा था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

स्वाधिनता आंदोलन के समय महाराष्ट्र प्रमुख केन्द्र था।

बाल गंगाधर तिलक, एन. सी. केलकर, दामोदर सावरकर, गोपालकृष्ण गोखले तथा काका कालेलकर जैसे प्रमुख महाराष्ट्र के जन-नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा हिन्दी के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

उपर्युक्त प्रमुख नेताओं ने अपनी क्षेत्रीय भाषा के प्रति मोह का त्याग कर राष्ट्रीय स्तर पर एक भाषा जो सभी को सम्पर्क-सूत्र में बांध सके इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृति दिलाने का अथक प्रयास किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्धा समिति, बंबई हिंदी विद्यापीठ, हिंदी प्रचार समिति जैसी प्रमुख संस्थानों की स्थापना की जिससे हिन्दी के विकास को बढ़ावा मिल सके तथा स्थानीय लोगों में हिन्दी को सीखने की प्रवृत्ति बढ़ सके।

बाल गंगाधर तिलक ने अपने साप्ताहिक समाचार पत्र 'केसरी' को हिन्दी भाषा में निकाला ताकि सम्पूर्ण भारत में पढ़ा जा सके।

काका कालेलकर ने हिन्दी भाषा को साहित्यिक क्षेत्र में अन्य किसी भाषा से कमतर नहीं है कह कर कविता एवं गद्य के विकास की प्रमुख भाषा के रूप में स्वीकार किया तथा 'हिन्दुस्तानी' भाषा के तौर पर हिन्दी के विकास-जिसमें हिन्दी व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उर्दू भाषा शामिल थी — को बढ़ावा दिया जिससे गुजरात में रह का उन्होंने लोगों के आम जीवन तक हिन्दुस्तानी को पहुँचा दिया।

वी. डी. सावरकर ने अपनी अनेक रचनाओं व भाषणों के माध्यम से हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि कहे जाने की वकालत की।

सिनेमा के विकास के साथ ही महाराष्ट्र में हिन्दी प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी थी तथा हिन्दी भाषा की अनेक शैलियाँ विकसित हुई।

महाराष्ट्र के प्रमुख नेताओं, संस्थाओं एवं पत्र-पत्रिकाओं का प्रमुख योगदान है हिन्दी को एक राष्ट्रभाषा के रूप में जनमानस तक पहुँचाने में।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

7. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि के संबंध पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' के योगदान पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

8. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation